अध्याय 8

अ. संगीत ग्रन्थों का अध्ययन
ब. रागों का समय सिद्धान्त

अ. संगीत ग्रन्थों का अध्ययन

भरत कृत नाट्य शास्त्र

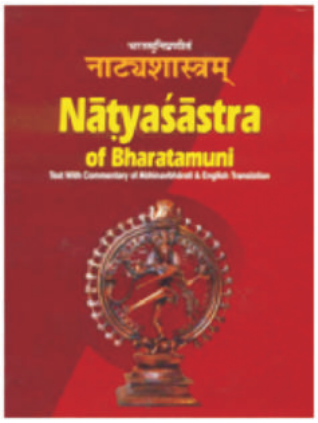

भारतीय संगीत के अध्ययन के लिए जो कुछ सामग्री आज उपलब्ध है। उसके प्रणेताओं में भरतमुनि का नाम सर्वोपरि रखा जा सकता है, क्योंकि भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र से पूर्व संगीत शास्त्र पर कोई ग्रंथ रचित नहीं हुआ है। कुछ पश्चिमी शोध कर्त्ताओं ने इस ग्रंथ का रचना काल 200 वर्ष ईसा पूर्व 500 ईस्वी के बीच का माना है, परन्तु भारतीय विद्वान इस ग्रंथ को और भी प्राचीन मानते है। यद्यपि भरत ने संगीत पर कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं लिखा परन्तु उनके द्वारा रचित ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में ही कुछ अध्याय है जो पूर्णतः संगीत से संबंधित है। भरत ने संगीत को नाट्य का ही एक अंग माना है।

नाट्यशास्त्र ग्रंथ में कुल 36 अध्याय है। परन्तु संगीत से संबंधित अध्याय 28वें से 33वें तक ही है। यदि नृत्य को भी संगीत से संबंधित माना जाए तो चौथा अध्याय तथा रस को और सम्मिलित कर लिया जाए तो छठा और सातवां अध्याय है जो पूर्णतः संगीत से संबंधित है।

अट्ठाईसवें अध्याय में वाद्यों के चार भेद, स्वर, श्रुति, ताल, ग्राम, मूर्च्छना, 18 जातियां एवं उनके लक्षण बताएं गए है। भरत ने सप्तक में कुल 22 श्रुतियां बताई है। षडज की 4 ऋषभ की 3, गंधार की 2, मध्यम की 4, पंचम की 4, धैवत की 3 एवं निषाद की 2 इस प्रकार 22 श्रुतियों को सप्तक में विभाजित किया गया है। भरत ने इन सात शुद्ध स्वरों के अतिरिक्त दो विकृत स्वर और बताए है–अंतर गंधार और काकली निषाद।

भारत के नाट्य शास्त्र की श्रुति–स्वर विभाजन निम्न प्रकार बताया गया है–

श्रुति संख्या	स्वर
पहली	
दूसरी	काकली निषाद
तीसरी	
चौथी	**षडज**
पॉचवीं	
छठी	
सातवीं	**ऋषभ**
आठवीं	
नवीं	**गंधार**
दसवीं	
ग्यारहवीं	अन्तर गंधार

श्रुति संख्या	स्वर
बारहवीं	
तेरहवीं	**मध्यम**
चौदहवीं	
पन्द्रहवीं	
सोलहवीं	
सत्रहवीं	**पंचम**
अठारहवीं	
उन्नीसवीं	
बीसवीं	**धैवत**
इक्कीसवीं	
बाईसवीं	**निषाद**

उनतीसवें अध्याय में जाति और रस, अलंकार, धातु एवं वीणा के विभिन्न प्रकारों की तथा उनके वादन विधि की विस्तृत चर्चा की गई है।

तीसवें अध्याय में सुषिर वाद्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

इक्त्तीसवें अध्याय में कला, लय और ताल का वर्णन है तथा विभिन्न गान प्रकार तथा गायक के गुण–दोष बताए गये है।

नाट्यशास्त्र के तेंतीसवें अध्याय में अवनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति, भेद वादन की विधियां वाद्य वादकों के लक्षण तथा 18 जातियों की विवेचना की गई है।

शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर

यह ग्रंथ पं. शारंग देव द्वारा रचित है। संगीत रत्नाकर को उत्तर भारतीय संगीत का आधार ग्रंथ कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस ग्रंथ की रचना तेरहवीं सदी में हुई थी। शारंगदेव स्वकालीन प्रचलित संगीत पद्धतियों और विचारों का प्राचीन विचारों के साथ समन्वय करना चाहते थे। प्राचीनकाल में जो स्थान नाट्यशास्त्र को उपलब्ध था, वहीं मध्यकाल में ''संगीत रत्नाकर'' का था। संगीत रत्नाकर में कुल 7 अध्यायों में विषय विभाजन हुआ है।

(1) स्वरगताध्याय

प्रथम अध्याय में शारंगदेव ने नाद का स्वरूप, नादोत्पत्ति और उसके भेद, सारणा चतुष्टयी, ग्राम मुर्च्छना तान निरूपण, श्रुति, स्वर साधारण स्वरों के रंग, वर्ण, देवता आदि के विषय में विस्तार से चर्चा की है। तदुपरांत जाति और उसके लक्षणों का भी विशद विवेचन किया है। इसके अतिरिक्त इस अध्याय में वर्ण, अलंकार इत्यादि का भी वर्णन है।

शारंगदेव ने शुद्ध स्वर 7 एवं विकृत स्वर 12 इस प्रकार कुल 19 स्वर–नाम बताए है। स्वरों को श्रुतियों में बांटने के लिये शारंगदेव ने भरत की तरह ही 4 3 2 4 4 3 2 का ही सहारा लिया है अर्थात् षडज चार श्रुति का ऋषभ तीन श्रुतियों का गंधार दो श्रुतियों का, मध्यम व पंचम चार–चार श्रुतियों के धैवत तीन श्रुतियों का तथा निषाद दो श्रुतियों का होता है। संगीत रत्नाकर के अनुसार श्रुति–स्वर विभाजन निम्न प्रकार है–

श्रुति संख्या	स्वर
पहली	कैशिक निषाद
दूसरी	काकली निषाद
तीसरी	च्युत षडज
चौथी	**षडज**
पॉचवीं	कैशिक षडज
छठी	अन्तर षडज
सातवीं	**ऋषभ**
आठवीं	विकृत ऋषभ
नवीं	**गंधार**
दसवीं	साधारण गंधार
ग्यारहवीं	अन्तर गंधार

श्रुति संख्या	स्वर
बारहवीं	
तेरहवीं	**मध्यम**
चौदहवीं	कैशिकमध्यम
पन्द्रहवीं	विकृत मध्यम
सोलहवीं	मध्यम ग्राम पंचम
सत्रहवीं	पं**चम**
अठारहवीं	मध्यम ग्राम धैवत
उन्नीसवीं	
बीसवीं	**धैवत**
इक्कीसवीं	
बाईसवीं	**निषाद**

(2) रागाध्याय

द्वितीय अध्याय में ग्रामराग, उपराग, भाषाराग, विभाषा राग, अन्तर्भाषा राग, रागांग राग, क्रियांग राग, उपांग राग और उनके नाम इत्यादि का वर्णन है।

(3) प्रकीर्णकाध्याय

तृतीय अध्याय में गायक के गुण–दोष, गमक, स्थान रागालप्ति एवं कुतप इत्यादि का वर्णन है। इसके अतिरिक्त इस अध्याय में शब्द के गुण–दोष एवं गायकी के लक्षणादि की भी चर्चा की गई है।

(4) प्रबंधाध्याय

चतुर्थ अध्याय में गांधर्व, गान, निबद्ध एवं अनिबद्ध भेद 75 प्रकार के प्रबंधों, जाति आदि का वर्णन किया गया है।

(5) ताल अध्याय

इस अध्याय में मार्ग ताल, देशी ताल आदि की व्याख्या है तथा साथ ही 121 तालों का परिचय भी दिया गया है।

(6) वाद्याध्याय

वाद्याध्याय में तत, सुषिर, धन तथा अवनद्ध वाद्यों का परिचय उनकी बनावट शैली, उनके गुण–दोष आदि का वर्णन है।

(7) नर्तनाध्याय

इस अंतिम अध्याय में नृत्य, नाट्य, नृत्त शरीर के अंगों पर अभिनय इत्यादि का विवेचन है।

संगीत रत्नाकार में कुल 246 रागों का वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ का आधार यद्यपि भरत कृत नाट्यशास्त्र है परन्तु शारंगदेव के काल तक जाति–गायन के स्थान पर राग–गायन का प्रचलन शुरू हो चुका था।

पं. भातखण्डे कृत – श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्

पं. विष्णु नारायण भातखंडे

यह ग्रंथ पं. विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा रचित है। यह ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस ग्रंथ की रचना तिथि सोमवार, चैत्रशुक्ल प्रतिपदा शक् 1831 तदनुसार मार्च 22 ईस्वी सन् 1909 है।

इस ग्रंथ का उद्देश्य वह मार्ग प्रशस्त करना है जिसके द्वारा 'लक्ष्य संगीत' अर्थात् प्रचलित संगीत का ज्ञान सुगमता से हो सकें। ग्रंथकर्त्ता के अनुसार संगीत के शास्त्र पक्ष तथा क्रियात्मक पक्ष दोनों का ही समन्वय करने वाली आधुनिक युगीन शिक्षा प्रणाली के लिये योग्य अध्यापकों का निर्माण एवं उनकी अपेक्षाओं की पूर्ति करना इस ग्रंथ का ध्येय है।

पं. विष्णु नारायण भातखंडे ने यह ग्रंथ 'चतुर पंड़ित' उपनाम से लिखा है, 'श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्' में दो अध्याय है, पहला 'स्वराध्याय' तथा दूसरा 'रागाध्याय'। 'स्वराध्याय' में श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, मेल, राग, वर्ण, अलंकार, तान आदि विषयों का निरूपण शास्त्रीय परम्परा के अनुसार एवं महत्वपूर्ण संगीत ग्रंथों से प्रमाण देते हुए किया है। इस ग्रंथ में संगीत रत्नाकर आदि प्राचीन ग्रंथो और ग्रंथकारों पर आलोचनात्मक टिप्पणियां भी की गई है।

'रागाध्याय में' जन्य एवं जनक राग वर्गीकरण के अनुसार उत्तर भारतीय संगीत में प्रचलित मेलों एवं उनसे जन्य रागों का वर्णन मिलता है। रागों का वर्णन यद्यपि संक्षेप में है परन्तु राग के बारें में जानने योग्य सभी महत्वपूर्ण बातों का समावेश है। रागों के विवरण के अतिरिक्त कुछ अन्य विषयों –जैसे गायक के गुणदोष, वाग्गेयकार के लक्षण, सुशारीर आदि पर संगीत रत्नाकर के अंश भी उद्धत किये गये है।

अंत में परिशिष्ट में विभिन्न संगीत ग्रंथो में प्रतिपादित रागों एवं राग वर्गीकरण की तालिकाऐं दी गई है। इस ग्रंथ में कहीं भी प्रचलित प्रबंध शैलियों तथा ताल पद्धति का उल्लेख नहीं मिलता है। यह ग्रंथ भातखंडे के समस्त सांगीतिक शोध एवं मान्यता का सार है। इसमें जो–जो बाते संकेत के तौर पर कहीं गई है, उनका विस्तार भातखंडे के अन्य ग्रंथो में हुआ है। इस प्रकार यह ग्रंथ उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का अत्यन्त महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ अथवा Practical Hand Book सिद्ध हुआ है।

ब. रागों का समय सिद्धान्त

कहते हैं 'समै समै सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय' अर्थात् इस संसार में कोई भी वस्तु बदसूरत नहीं होती, बल्कि समय–समय पर प्रयोग की गई प्रत्येक वस्तु अपने आप में सुंदर होती है। इसी नियम के तहत दिन रात के 24 घंटों में गाए जाने वाले राग अपने–अपने समय पर गाए जाने पर ही आनंद देते हैं। इसे ही गायन समय सिद्धान्त कहा जाता है। इसे गायन–समय–चक्र भी कहते हैं। क्योंकि कुछ राग प्रातः काल गाए जाने पर मधुर और प्रभावी होते है, तो कुछ दोपहर में और कुछ रागों का गायन सायंकाल में किया जाता है, यही क्रम सांय काल से लेकर रात्रि काल तक चलता रहता है। रागों का मुख्य उद्धेश्य ''रजंको जनचित्तानाम् स राग कथितो बुधैः'' है, अर्थात् मनोरंजन या मन की संतुष्टि के लिए जिन स्वरावलियों का गायन किया जाता है, वहीं 'राग' है। इसलिए प्राचीन समय से ही , न केवल राग–रागिनी, बल्कि वैदिक मंत्र, ऋचाएँ और भरतकालीन जातियाँ को समयानुसार गायन–वादन की परंपरा रही है इसीलिए कहा जाता है, ''समै समै सुंदर सवै''।

मंत्र ऋचाएँ, जातियां एवं राग रागिनियों का घनिष्ठ संबंध ''रस'' से माना गया है, और इन सबकी रचना स्वरों से होती है, जबकि प्रत्येक स्वर का अपना 'रस' अपना अंदाज और अपना प्रभाव होता है। जैसे–कोमल रिषभ–धैवत करूण रस की अभिव्यक्ति करते हैं, तो शुद्ध रिषभ–धैवत भक्ति परक होते है। इस प्रकार प्रत्येक स्वर का अपना ''रस'' होता है, जिसका मानव–मन से सम्बंध होता है। इन्हीं स्वरों से बने हुए राग और रागिनियों के गायन करने से व्यक्ति में एक भाव, एक रूझान पैदा होता है, जो उसके समस्त व्यक्तिव का निर्माण करता है। फिर राग–रागिनियों के मूल तत्व स्वर व लय (गति) है, जिन्हें व्यक्त करने का एक तरीका (style) होता है, एक समय होता है, जो हमारे बाह्य और आन्तरिक तंत्र में पूर्ण सन्तुलन पैदा करके हमें मानसिक और आत्मिक सुकून देता है। यही कारण है कि आज चिकित्सा जगत में भी मधुर स्वरों का प्रयोग करके विकृत मन को शान्त करने के प्रयास किये जाते हैं। लेकिन इसके लिए समय–असमय का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

(1) जब समस्त ब्रह्माण्ड का कण–कण समय की सीमा में बाँधा हुआ है जैसे–सूर्योदय होना सूर्यास्त का होना, पृथ्वी का अपनी धुरी पर चक्कर लगाना, भिन्न–भिन्न प्रकार के मौसमों का आना, समुद्र में ज्वार–भाटे का आना, समय की सीमा को दिखाता है, यहाँ तक कि प्रत्येक प्राणी की श्वास प्रश्वास, धडकन आदि क्रियाएँ एक गति से चलती है। यदि इन क्रियाओं में कहीं से भी, कैसा भी अवरोध आता है तो प्राकृतिक आपदाएँ भूचाल, भूस्खलन, storm, बाढ आदि आने लगते हैं उसी प्रकार मानव की श्वासों में अवरोध होने पर डाक्टर बुलाने की जरूरत पड़ जाती है। इसी प्रकार हमारे राग–रागिनियाँ में जिन स्वरों का प्रयोग किया जाता है, उनके गायन समय की भी एक सीमा, एक मर्यादा होती है। इसलिए तो कुछ राग सुबह, कुछ दिन दोपहर और कुछ सांय एवं रात्रि में गाये जाते है, इसी प्रकार कुछ राग किसी खास मौसम में गाए जाने पर खिलते हैं। जैसे वसन्त ऋतु में राग बसन्त, वर्षाकाल में मल्हार–अंग के राग, तो होली आदि के समय काफी, भीमपालासी आदि राग। इसलिए प्राचीन काल से लेकर आज तक रागों के गायन वादन के समय सिद्धान्त की (time key theory of Ragas) की मान्यता हैं रागों के गायन का यह समय सिद्धांत भले ही वैज्ञानिक न हो, किन्तु निश्चित रूप से यह मनोवैज्ञानिक है, इसी कारण यह (समय सिद्धांत) परम्परा से चला आ रहा है।

(2) भारतीय रागों व स्वरों का संबंध मनुष्य के हृदय से है, जिस प्रकार प्रातः काल से लेकर रात्रि तक मन के भाव बदलते रहते हैं। ठीक उसी प्रकार प्रातः से लेकर रात्रि तक हमारे यहां भिन्न–भिन्न रागों के गायन का विधान रखा गया है क्योंकि स्वरों का हमारें भावों (mood) से आन्तरिक नाता है, और इन्हीं स्वरों से रागों की रचना की गई है। अतएव समयानुसार रागों का गायन मानव मन को एक प्रकार की सन्तुष्टि देता है। इस सम्बंध में एक कथा है, नारद नाम के एक गायक गंधर्व थे। वे समय–असमय राग–रागिनियों का गायन वादन करते रहते थे। परिणाम स्वरूप वे सभी राग रागिनियाँ क्षत–विक्षत हो गये। जब नारद को मालूम हुआ, कि समय–असयम इनका गायन करने सेइन रागों की यह दुर्दशा हुई, तब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, और वे पुनः उनका गायन समयानुसार करने लगे, परिणामतः सभी राग–रागिनियाँ अपने पूर्ववत स्वरूप में आ गई। अब यह किंवदन्ती कितनी प्रामाणिक है, यह तो कहा नहीं जा सकता है, किन्तु इससे यह अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि ''राग'' स्वरों का एक मनोवैज्ञानिक मधुर किन्तु अव्यक्त (abstract) व्यक्तिव है जिसका प्रभाव हमारे मन–मस्तिष्क और बाह्य शरीर पर अवश्य पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि ''यथाकाले समारब्धं गीतं भवति रंजकम्'' अर्थात् समय पर गाया गया, गीत ही रंजक और प्रभावशाली होता है अतएव भारतीय संगीत–विद्धानों ने कुछ ऐसे नियम बनाए हैं, जिनके द्धारा मोटे रूप से रागों के गायन समय

पर प्रकाश डाला जा सकता है।

राग–गायन समय सिद्धांत (time key theory of Ragas) के लिए तीन बातों का ध्यान रखना होगा–(1) स्वरों के द्वारा राग–गायन समय का निर्धारण (2) राग के वादी–सम्वादी स्वरों द्वारा समय ज्ञात करना तथा (3) मध्यम स्वर द्वारा रागों का समय जानना।

स्वरों के द्वारा राग–गायन समय का निर्धारण

रागों में लगने वाले शुद्ध और विकृत स्वरों के प्रयोग की दृष्टि से विद्वानों ने स्वरों के तीन वर्ग बनाए हैं, जिनके आधार पर दिन और रात के 24 घंटो में रागों के गायन का समय एक चक्र (circle) की भांति चलता रहता है– (i) कोमल रे–ध वाला वर्ग (ii) रे–ध शुद्ध स्वरों का वर्ग (iii) ग नी कोमल स्वरों का वर्ग।

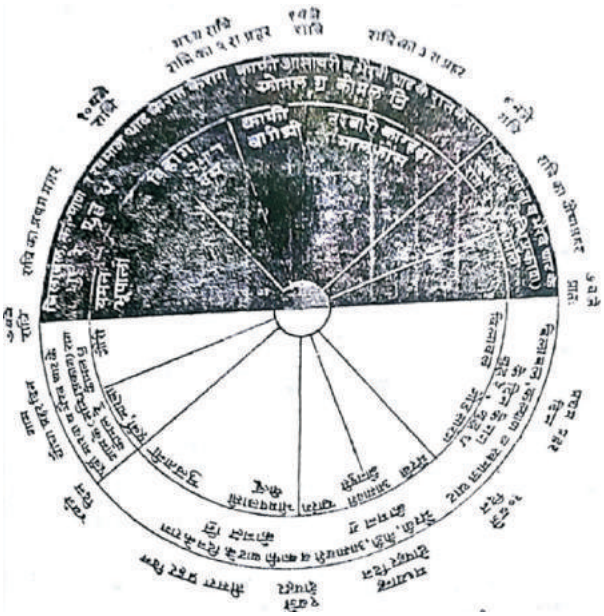

(i) **कोमल रे–ध वाला वर्ग–** रे ध कोमल स्वरों का वर्ग, सन्धि प्रकाश रागों का समय कहलाता है। जिसमें रिषभ–धैवत स्वर कोमल प्रयुक्त किए जाते हैं। ये राग चूंकि दिन और रात की सन्धि के समय में गाए बजाए जाते हैं अतएव ये राग सन्धि प्रकाश कहलाते हैं। 24 घंटों में इस प्रकार का सन्धि काल चूंकि दो बार आता है प्रातः 4 बजे से सात बजे, और सायं 4 बजे से सात बजे के बीच में। अतएव 4 से 7 बजे प्रातः काल गाए जाने वाले रागों में ऋषभ–धैवत कोमल और शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। ये प्रातः कालीन सन्धिप्रकाश राग कहलाए जाते है। जैसे–राग भैरव। स रे॒ ग म म प ध॒ नी स इसी प्रकार सांयकाल 4 से 7 बजे तक के बीच में गाए जाने वाले राग सायंकालीन सन्धिप्रकाश राग हैं इनमें भी कोमल ऋषभ और धैवत के प्रयोग के साथ तीव्र मध्यम भी लगाया जाता है। सांयकालीन होने के कारण इन रागों में तीव्र मध्यम का होना आवश्यक है। जैसे–राग पूर्वी रे॒ग मे प ध॒ नी सं

(ii) **रे–ध शुद्ध स्वरों का वर्ग–** प्रातः 4 से 7 बजे तक गाए जाने वाले वर्गों के बाद शुद्ध रिषभ–धैवत वाले स्वरों का वर्ग आता है। इनका समय प्रातः 7 बजे से 10 बजे या 12 बजे तक का होता है। इसी प्रकार सायं 7 बजे से 12 बजे तक का होता है। इन रागों में ऋषभ व धैवत का शुद्ध होना जरूरी है क्योंकि ये दोनों स्वर जागरण के प्रतीक है तथा रागों का वांछित प्रभाव पाने के लिए इस वर्ग में शुद्ध गंधार भी आवश्यक स्वर माना जाता है। इस वर्ग के रागों में विलावल–कल्याण आदि थाटों के रागों का गायन–वादन किया जात है। यही क्रम (सायं 7 से 12) चलता है।

(iii) **ग नी कोमल स्वरों का वर्ग–** रागों के समय सिद्धांत को दर्शाने वाले स्वरों का तीसरा वर्ग कोमल गंधार निषाद का है। इस वर्ग में भैरवी काफी आसावरी, तोड़ी आदि थाटों के राग गाए बजाए जाते हैं। ग–नी कोमल वाले रागों का समय, शुद्ध रे–ध वर्ग के बाद अर्थात् सायं 7 बजे से 12 बजे के बाद आता है। अर्थात् 12 बजे से 4 बजे तक के बीच में होता है। ग–नी कोमल स्वर वाले राग के लिए विद्वानों का मत है कि इस वर्ग के रागों को यदि केवल कोमल गंधार वाले राग कहा जाए तो अधिक उपयुक्त होगा। इस वर्ग के राग अधिकतर आसावरी, काफी और भैरवी थाट के राग होते है। इन थाटों में गंधार व निषाद कोमल है किन्तु इन थाटों से उत्पन्न रागों में शुद्ध निषाद भी प्रयोग में लाया जाता है, जैसे तोड़ी थाट का राग मधुबन्ती, मुल्तानी, काफी थाट का पटदीप आदि अतएव इस वर्ग में गन्धार का कोमल होना आवश्यक है। इन रागों का गायन समय दोपहर 12 से 4 बजे सायं और इसी क्रम में रात्रि 12 बजे से प्रातः 4 बजे। फिर यही क्रम प्रातः 4 से 6 बजे, 7 से 10 या 12 बजे और 12 बजे से सुबह 4 बजे तक। यही रागों का समय सिद्धांत है (the time key theory of Ragas) या रागों का ''समय चक्र'' कहा जाता है। स्वरों द्वारा रागों का समय निर्देश करने में जो राग दिन गेय राग होते हैं उनमें तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता हैं।

राग के वादी–सम्वादी स्वरों द्वारा समय ज्ञात करना

राग में लगने वाले प्रधान स्वरों (वादी और सम्वादी स्वरों) द्वारा राग–गायन–समय पर भी विचार किया जाना आवश्यक है। प्राचीन संगीत में जिसे 'अंश स्वर' कहा जाता था वहीं आज के राग–गायन में वादी स्वर के रूप में प्रयोग किया जाता है। वादी स्वर के लिए कहा जाता है 'वदति इति वादी' अर्थात् ऐसे स्वर से राग का स्वरूप, चलन और मोटे तौर पर समय सीमा ज्ञात हो, वह स्वर राग का वादी या प्रधान स्वर होता है। जिस राग का वादी स्वर सप्तक के पूर्वांग का स्वर हो वह पूर्वांगवादी राग होता है, और पूर्वांगवादी रागों का गायन समय दोपहर 12 बजे से रात्रि के 12 बजे तक के बीच में होता है अर्थात् 'स रे ग म प' सप्तक के इन पूर्वांग स्वरों में से काई स्वर जिस राग का वादी स्वर हो वह पूर्वांगवादी राग है, जैसे यमन, विहाग, भूपाली आदि राग में गंधार स्वर वादी है। अतएव ये सभी राग 12 बजे दिन से रात्रि 12 बजे तक के बीच में गाए बजाए जाते है।

इसी प्रकार जिन रागों का वादी स्वर सप्तक के उत्तरांग का हो, अर्थात् 'म प ध नी सं' इन स्वरों में से जो स्वर, राग का वादी स्वर हो, वह राग उत्तरांगवादी राग कहलाता है।

मोटे तौर पर उत्तरांगवादी रागों का गायन समय रात्रि 12 बजे से दिन के 12 तक के बीच का है जैसे भैरव, देशकार, रामकली आदि। ये सभी राग रात्रि 12 से दिन 12 बजे तक के बीच में गाए बजाए जाते हैं। इस प्रकार वादी स्वर न केवल राग के स्वरूप को बताता है, बल्कि यह स्वर रागों के समय का बोध भी कराता है। उदाहरण के लिए देशकार और भूपाली राग म–नी वर्जित औडव जाति के राग है दोनों में समान स्वरों का प्रयोग किया जाता है जैसे–स रे ग प ध सं, सं ध प ग रे स इन दोनों रागों के चलन, स्वरूप और समय को बतलाने वाला स्वर 'वादी' है। देशकार राग का वादी स्वर धैवत है, अतएव देशकार एक उत्तरांगवादी राग है जिसका गायन समय प्रातः काल है, दूसरी और भूपाली राग का वादी स्वर गंधार है अतः भूपाली एक पूर्वांगवादी राग है जिसका गायन समय रात्रि है। सभी स्वरों में एक वादी स्वर से दोनों रागों की समय सीमा का ज्ञान होता है ।

मध्यम स्वर द्वारा रागों का समय जानना

रागों के गायन वादन समय का संकेत देने वाला 'मध्यम' स्वर भी है। अधिकांश शुद्ध ''मध्यम'' दिन गेयता का द्योतक है, तो तीव्र मध्यम रात्रिगेयता की ओर इशारा करता है । क्योंकि अधिकतर प्रातःकाल और दिन या दोपहर में जिन रागों का गायन वादन होता है, उन सभी में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है, । इसी प्रकार सांयगेय जितने भी राग हैं उनमें तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार मध्यम स्वर से रागों के गायन समय पर प्रकाश डाला जा सकता है।

रागों का समय सिद्धांत (time key theory of Rages) वैज्ञानिक नहीं है, किन्तु मनगढ़त भी नहीं है। बल्कि यह पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है। प्राचीन ग्रंथों मं भी उल्लेख है, और यह अनुभव सिद्ध भी है, क्योंकि प्रत्येक स्वर का अपना मन मिजाज होता है, उसका अपना रस होता है, और स्वरों के संयोग से बने हुए रागों का हमारे आन्तरिक तंत्र से रागात्मक सम्बंध रहता है। इसीलिए अलग–अलग समय पर गाये जाने वाले राग हमारी भावनाओं को प्रभावित करते है। यही कारण है सातवीं शती के मतंगमुनि ने रागों के सम्बंध में लिखा है–''रंजको जनचित्तानाम् स राग कथितों बुधैः''। राग–गायन का यह समय सिद्धांत कभी टूटता नहीं है। प्रातः से लेकर रात्रि तक हमारे mood के अनुरूप रागों का गायन एक चक्र के अनुरूप चलता रहता है जिसे विद्वानों ने निम्न प्रकार से व्यक्त किया है–

मुख्य बिन्दु

- भारतीय संगीत के दो सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ भरत कृत नाट्य शास्त्र तथा शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर है।
- नाट्यशास्त्र ग्रंथ में कुल 36 अध्याय है। परन्तु संगीत से संबंधित अध्याय 28वें से 33वें तक ही है। यदि नृत्य को भी संगीत से संबंधित माना जाए तो चौथा अध्याय तथा रस को और सम्मिलित कर लिया जाए तो छठा और सातवां अध्याय है जो पूर्णतः संगीत से संबंधित है
- संगीत रत्नाकर में कुल सात अध्याय हैं।
- भरत ने सात शुद्ध तथा दो विकृत कुल नौ स्वर बताए हैं। जबकि शारंग देव ने सात शुद्ध और बारह विकृत स्वर बताए हैं।
- श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् संस्कृत में लिखा गया आधुनिक उत्तर भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके रचयिता पं0 विष्णु नारायण भातखंडे है। यह ग्रंथ 1909 में लिखा गया था। इसमें श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, मेल, राग, वर्ण, अलंकार, तान आदि

विषयों का निरूपण शास्त्रीय परम्परा के अनुसार एवं महत्वपूर्ण संगीत ग्रंथों से प्रमाण देते हुए किया है।

- रागों में लगने वाले शुद्ध और विकृत स्वरों के प्रयोग की दृष्टि से विद्धानों ने स्वरों के तीन वर्ग बनाए हैं, जिनके आधार पर दिन और रात के 24 घंटो में रागों के गायन का समय एक चक्र (circle) की भांति चलता रहता है– (i) कोमल रे–ध वाला वर्ग (ii) रे–ध शुद्ध स्वरों का वर्ग (iii) ग नी कोमल स्वरों का वर्ग।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. नाट्यशास्त्र के अनुसार विकृत गंधार कौनसा है?
   (अ) गंधार (ब) कोमल गंधार (स) अंतर गंधार (द) काकली गंधार
2. संगीत रत्नाकर में कितने अध्याय हैं–
   (अ) 5 (ब) मध्यम (स) गंधार (द) पंचम
3. अध्व दर्शक स्वर कौनसा हैं?
   (अ) षड़ज (ब) मध्यम (स) गंधार (द) पंचम

उत्तरमाला– (1) स (2) स (3) ब

प्रश्न–

1. नाट्यशास्त्र के रचयिता कौन थे?
2. संगीतरत्नाकर नामक ग्रंथ किसने लिखा था?
3. चतुर पंडित कौन थे ?
4. नाट्य शास्त्र में कुल कितने अध्याय हैं?इनमें से संगीत से संबंधित अध्याय कौन – से है?
5. श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम नामक ग्रथ के विषय में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
6. संधिप्रकाश राग क्या हैं?समझाइये।
7. रागों के गायन समय का निर्धारण करने में मध्यम स्वर एवं राग के वादी स्वर की क्या भूमिका है?
8. नाट्यशास्त्र के विषय में बताइये।
9. भारतीय संगीत के समय सिद्धान्त को समझाइये।

अभ्यास कार्य

? भारतीय संगीत के प्रमुख प्राचीन तथा आधुनिक ग्रंथों के नाम एवं उनके लेखकों के बारे में जानकारी प्राप्त करना

? भातखंडे के संगीत के क्षेत्र में दिये गए योगदान के विषय में जानकारी प्राप्त करना

? राग–समय चक्र का चार्ट बनाकर अपनी कक्षा में लगाना।